Children now we are starting Class-2 Hindi

Chapter -2 , **पंडित भोलानाथ (चित्रकथा)**

2

पंडित भोलानाथ

(चित्रकथा)

प्रतिध्वनि

सुनो सबकी करो मन की।

पंडित भोलानाथ बहुत भोले थे। वे छल-कपट की बातें नहीं जानते थे। एक बार वह एक यजमान के घर भोजन करने गए।

भोजन कराने के बाद यजमान ने दक्षिणा में उन्हें एक बकरी दी। वे बकरी देते हुए बोले-

महाराज! इसे स्वीकार कीजिए। यह आपके और आपके बच्चों के काम आएगी।

पंडित जी बकरी का बच्चा लेकर अपने घर चल पड़े। थोड़ी देर चलने के बाद उन्होंने सोचा- यह बकरी का बच्चा है। थक गया होगा.....

ऐसा सोचकर बकरी के बच्चे को कंधे पर रखकर पंडित जी आगे चलने लगे। तीन ठग आ रहे थे। तीनों ठगों ने आपस में सलाह करके पंडित जी को ठगने की बनाई। उनमें से एक ठग पंडित जी के पास आया और बोला-

राम-राम पंडित जी! कहिए कहाँ से चले आ रहे हैं? अपने कंधे पर यह कुत्ता क्यों उठा रखा है?

कुत्ता नहीं, बकरी का बच्चा है।

महाराज, अब मैं आपको कैसे समझाऊँ। ध्यान से देखिए, यह बकरी का बच्चा नहीं, कुत्ता है। विश्वास नहीं तो रास्ते में किसी और से पूछ लीजिएगा।

पहला ठग चला गया। थोड़ी दूर चलने के बाद दूसरा ठग मिला। पंडित जी को नमस्कार किया और बोला-

पंडित जी! यह कुत्ता आपको कहाँ से मिला? बड़ा अच्छा है!

अरे! तुम्हें यह कुत्ता दिखाई दे रहा है? यह बकरी का बच्चा है। ठीक से दिखाई नहीं देता क्या?

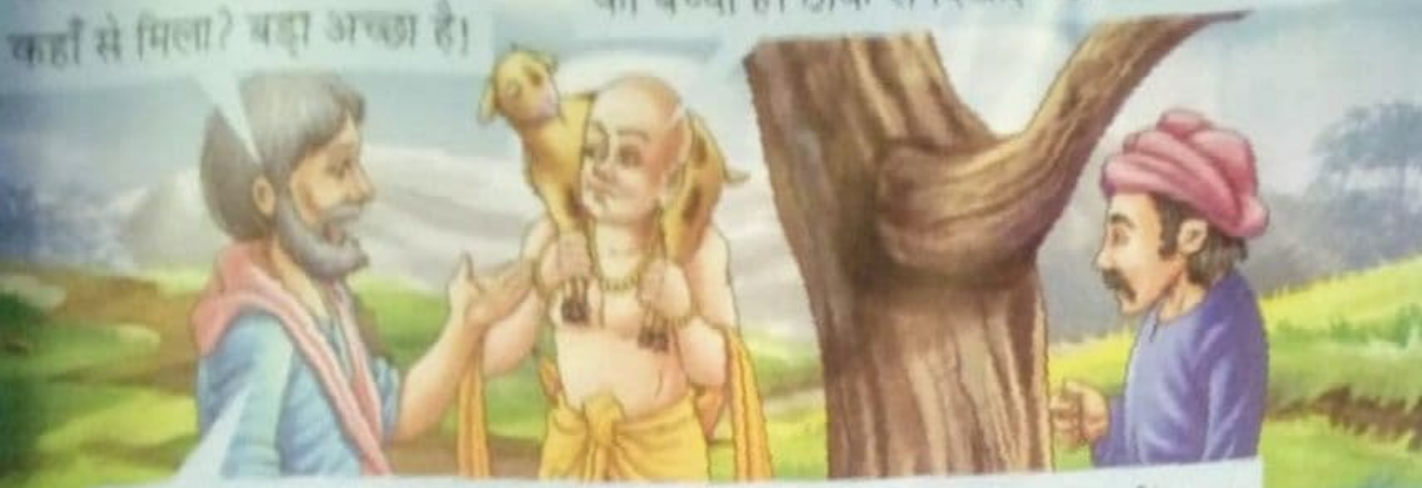

महाराज! आपको क्या हो गया है? जरा ध्यान से देखिए, यह बकरी नहीं कुत्ता है। किसी ने आपको धोखा दिया है, पंडित जी!

अभी दोनों की बातचीत हो रही थी तभी तीसरा ठग भी वहाँ आ गया और बोला-

पंडित जी! आप ब्राह्मण होकर कुत्ते को कंधे पर बिठाकर घूम रहे हैं। आपका शरीर अपवित्र हो गया है। इसे छोड़कर पहले आप स्नान करने जाइए, अन्यथा लोग आपकी हँसी उड़ाएँगे।

ठगों की बात सुनकर पंडित जी सोचने लगे-

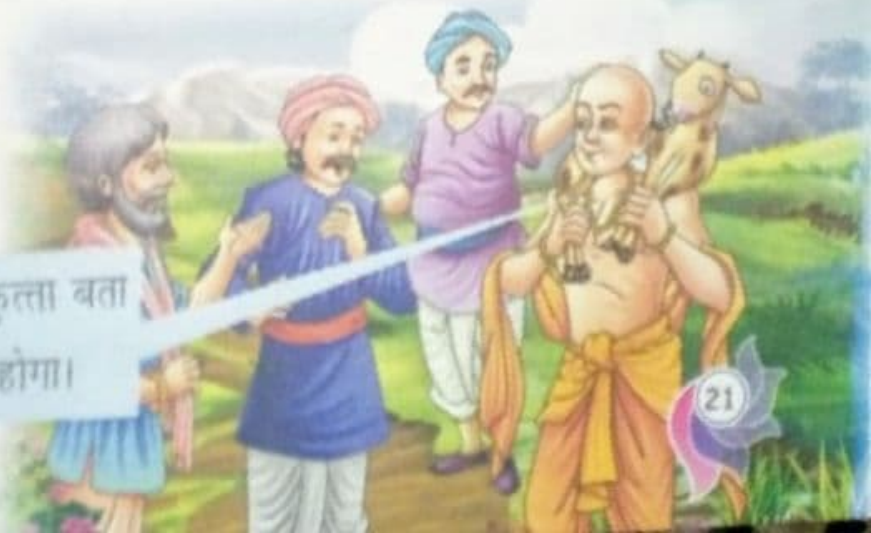

तीन-तीन आदमी इसे कुत्ता बता रहे हैं, तो यह कुत्ता ही होगा।

यह सोचकर वे बकरी के बच्चे को वहीं कंधे से उतारकर यजमान के घर लौट पड़े।

यजमान के घर पहुँचकर पंडित जी ने सारी बात कह सुनाई। सारी बातें सुनने यजमान ने कहा-

पंडित जी, उन तीनों धूर्तों ने आपको ठग लिया। वह कुत्ता नहीं, बकरी ही थी। आपको उनकी बातों में नहीं आना चाहिए था।

पंडित जी ने
माथा पीट लि
अपनी बुद्धि
लेना चाहिए था
ने ठीक ही कह

'दूसरों की
नहीं आना
अर्थात, सुनो
करो मन की।

जीवन मूल्य : हमें बिना सोचे-समझे दूसरों की बातों पर विश्वास नहीं करना च

पाठ -2

पंडित भोलानाथ (चित्रकथा)

सारांश-

प्रस्तुत चित्रकथा के माध्यम से यह समझाया गया है कि हमें दूसरों से विचार-विमर्श अवश्य करना चाहिए अथवा सलाह अवश्य लेनी चाहिए किन्तु अंत में सोच-समझकर अपने विवेकानुसार ही निर्णय लेना चाहिए ।

प्रस्तुत कहानी ' पंडित भोलानाथ ' में पंडित भोलानाथ बहुत भोले थे। वे किसी भी तरह की छल–कपट की बातें नहीं जानते थे। एक बार वह एक यजमान (धार्मिक कार्य कराने वाला) के घर भोजन करने गए। भोजन कराने के बाद यजमान ने पंडित जी को दक्षिणा में एक बकरी दी जिससे वह बकरी उनके और उनके बच्चों के काम आ सके। पंडित जी बकरी का बच्चा लेकर अपने घर की ओर चल पड़े । थोड़ी देर बाद पंडित जी को लगा कि बकरी का बच्चा थक गया होगा इसलिए उन्होनें उसे अपने कंधे पर उठा लिया। जब पंडित जी बकरी के बच्चे को कंधे पर उठा कर ले जा रहे थे तो उसी समय तीन ठगों ने उन्हें देखा और आपस मे सलाह करके पंडित जी को ठगने की योजना बनाई। पहला ठग पंडित जी के पास आया और बोला कि आपने अपने कंधे पर कुत्ता क्यों उठा रखा है? पंडित जी ने कहा कि ये कुत्ता नहीं , बकरी का बच्चा है। ठग ने कहा ध्यान से देखिए ये बकरी नहीं ,कुत्ता है। विश्वास नहीं तो रास्ते में किसी और से पूछ लीजिएगा। इसी प्रकार रास्ते में दूसरे और तीसरे ठग ने भी बकरी को कुत्ता ही बताया। ठगों की बात सुनकर पंडित जी सोचने लगे कि तीन-तीन आदमी इसे कुत्ता बता रहें हैं , तो यह कुत्ता ही होगा। ऐसा सोचकर उन्होनें बकरी के बच्चे को कंधे से उतार दिया और यजमान के घर जाकर उन्हें सारी बात सुनाई। यजमान ने उन्हें बताया कि वह कुत्ता नहीं, बकरी ही थी। तीनों ठगों ने आपको ठग लिया है। पंडित जी को अपनी भूल पर पछतावा होने लगा क्योंकि उन्होनें अपनी बुद्धि (दिमाग) से काम नहीं लिया था। अतः हमें बिना सोचे-समझे दूसरों की बातों पर विश्वास नहीं करना चाहिए।

नोट -केवल पढ़ने एवं समझने के लिए ।

लिखित

(1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) यजमान ने पंडित भोलानाथ को दक्षिणा में क्या दिया ?

उत्तर - यजमान ने पंडित भोलानाथ को दक्षिणा में एक बकरी दी।

(ख) पंडित जी की किन लोगों से रास्ते में मुलाकात हुई ?

उत्तर - पंडित जी की तीन ठगों से रास्ते में मुलाकात हुई।

(ग) तीनों ठगों ने पंडित जी को क्या बात समझाई ?

उत्तर - तीनों ठगों ने पंडित जी को समझाया कि उन्होने अपने कंधे पर जिसे उठा रखा है, वह बकरी नहीं कुत्ता है।

(घ) पंडित जी ने बकरी को क्यों छोड़ दिया ?

उत्तर - तीन-तीन लोग बकरी को कुत्ता बता रहे थे , इसलिए पंडित जी ने उसे छोड़ दिया।

(ङ) यजमान ने पंडित जी को क्या समझाया ?

उत्तर - यजमान ने पंडित जी को समझाया कि तीनों ठगों ने बकरी के बच्चे को कुत्ता बताकर उन्हें ठग लिया है।

(च) इस कहानी से हमें क्या शिक्षा मिलती है ?

उत्तर - इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें दूसरों की बातों में न आकर अपनी बुद्धि से काम लेना चाहिए।

2) किसने, किससे कहा ?

(क) " महाराज! इसे स्वीकार कीजिए ! यह आपके और आपके बच्चों के काम आएगी। "

किसने- यजमान ने **किससे**- पंडित जी से

(ख) " विश्वास नहीं तो रास्ते में किसी और से पूछ लीजिएगा। "

किसने- पहले ठग ने **किससे**- पंडित जी से

(ग) " यह बकरी का बच्चा है। ठीक से दिखाई नहीं देता क्या ? "

किसने- पंडित जी ने **किससे**- दूसरे ठग से

---

3) पंडित जी , यजमान और ठगों की विशेषता बताने वाले दो-दो शब्द चुनकर लिखिए-

धूर्त , कपटी , दानी , ज्ञानी , भोला , श्रद्धालु

पंडित जी - भोला ज्ञानी

यजमान - दानी श्रद्धालु

ठग - धूर्त कपटी

---

4) सही उत्तर पर (√) का निशान लगाइए–

(क) पंडित जी कंधे पर क्या लेकर जा रहे थे ?

(i) कुत्ता ◯ (ii) भेड़ ◯ (iii) बकरी (√)

(ख) उन तीनों धूर्तों ने पंडित जी को _____ लिया।

(i) गोद में ◯ (ii) ठग (√) (iii) पकड़ ◯

(ग) _____ की बातों में नहीं आना चाहिए।

(i) पहले ◯ (ii) दूसरों (√) (iii) पंडित जी ◯

नोट-

1) पढ़ाए गए पाठ को लिखें तथा याद करें।

2) नई कॉपी उपलब्ध न हो तो किसी रफ कॉपी में पाठ का अभ्यास -कार्य तथा प्रश्न – उत्तर लिखें।

3) पाठ के कठिन शब्दों का अभ्यास लिख-लिखकर करें।

4) शब्दार्थ पुस्तक से लिखें।

5) दिए गए क्रम के अनुसार पाठ को समझें-

(क) पाठ का वाचन (reading) करें।

(ख) पाठ का सारांश पढ़ें।

(ग) फिर शब्दार्थ, प्रश्न-उत्तर व अभ्यास कार्य करें।